फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 187

जनवरी 2004

कहत कबीर

महाविनाशकारी बमों और बम वाहकों के सफल परीक्षण से जिन्हें उल्लास–खुशी मिलती है उनमें बहुत ही गम्भीर नुक्स हैं।

तुम भी नौकर, मैं भी नौकर

अधम है चाकरी। नौकरी-चाकरी की दलदल में लोगों की सँख्या बढ़ती जा रही है।

• पुराने का नये के प्रति; परमानेन्ट का कैजुअल के प्रति; कम्पनी द्वारा रखे कैजुअल वरकर का ठेकेदार के जरिये रखे वरकर के प्रति; दो पैसे अधिक लेने वाले का दो पैसे कम वाले के प्रति; यू.डी.सी. का एल.डी.सी. के प्रति; एल.डी.सी. का पियन के प्रति; लोकल का बाहर वाले के

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती।

प्रति; सीनियर का जूनियर के प्रति; हट्टे-कट्टे का कमजोर के प्रति व्यवहार अगर घमण्ड-रौब का प्रदर्शन करता है तो वह खुन्दकों को जन्म देता है। दुर्व्यवहार तो है ही खुन्दक का जनक। **अनिश्चितता ही निश्चित है वाले इस दौर में खुन्दकें कभी भी हानि पहुँचा सकती हैं, भारी नुकसान करती हैं।**

• अपनी कैटेगरी से जो अलग हैं उनसे कोई मतलब नहीं रखना, उनमें कोई अर्थ नहीं देखना

मेहनतकशों को छलनी करने वाली वर्ण व्यवस्था को मजदूरों पर कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकर, परमानेन्ट वरकर के रूप में थोपा जा रहा है।

गुँथे, लोगों के आपस में अधिक गुँथते-बँधते-जुड़ते जाते माहौल में सामान्य जीवन स्तर को शर्तिया गिराते जाना लिये है। निचलों की स्थिति तो बद से बदतर होती ही है, दो पैसे ज्यादा लेने वालों के लिए भी खतरे बढ़ते जाते हैं, डर खाने लगता है।

•एक ही साँस में: एक होंगे तो सारी समस्यायें हल हो जायेंगी – एकता हो ही नहीं सकती! अक्सर सुनने को मिलता है कि माहौल तो यह बदल ही नहीं सकता – लोगों की सोच ही ऐसी है और ऐसी सोच का सबसे बड़ा कारण मजबूरी

संविधान और कानून शोषण के लिये हैं। सरकारें और सरकारी महकमे मजदूरों को बहलाने–फुसलाने–कुचलने के लिये हैं।

हैं। यह सच है कि मजदूरों के बीच तालमेलों के बिना मजदूरों के हित में कुछ नहीं होता, कुछ भी नहीं होगा। आइये चर्चा करें कि इस मनहूस माहौल में भी उन सब तालमेलों की जो हम करते रहते हैं, और ज्यादा कर सकते हैं:–

✶ दिन अथवा रात में पहली मुलाकात के वक्त दुआ-सलाम और हाल-चाल पूछना; ✶ चाय साथ बैठ कर पीना; ✶ लन्च इक्ट्ठे करना और एक-दूसरे की रोटी-सब्जी के स्वाद लेना; ✶फैक्ट्री में चोट लगने पर एक-दूसरे की मदद करना; ✶ आपस में झगड़ा होने पर बीचबचाव करना; ✶ सुपरवाइजर-मैनेजर के व्यवहार पर मिल कर लगाम लगाना; ✶ ड्युटी छूटने पर कहीं पर बैठ कर बातें करना; ✶एक-दूसरे के संग नरमी से, आदर से बात करना; ✶एक-दूसरे की भावनाओं का लिहाज रखना; ✶एक-दूसरे के निवास पर जाना; ✶त्यौहारों, शादी-विवाह, जन्म दिन उत्सवों पर एक-दूसरे के घर जाना; ✶ हारी-बीमारी, परिवार में किसी की मृत्यु पर एक-दूसरे के निवास स्थान पर जाना; ✶अन्य जगहों पर काम करने वाले वरकरों से बातें करना; ✶ छुट्टी करके, ओवर टाइम छोड़ कर, किराये पर दस-बीस रुपये खर्च कर जरूरत के समय एक-दूसरे के संग खड़े होना; ✶.....

विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरे होते हुये भी हम इन गतिविधियों में शरीक होते हैं। अपनी इन गतिविधियों को हम और बढा सकते हैं .... और तब यह मनहूस माहौल बदलने में देर नहीं लगेगी।

जुगलबन्दी तवे-चूल्हे की

जे.एम.ए. इन्डस्ट्रीज मजदूर : "14/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 20 वर्ष से प्रति वर्ष 20 प्रतिशत बोनस दिया जा रहा था परन्तु इस बार 8.33 प्रतिशत पर मैनेजमेन्ट अड़ गई। कम्पनी ने दिवाली के समय 4 बन्दूकधारी और 40 लठैत फैक्ट्री में बुला लिये थे। यूनियन लीडर 8.33 प्रतिशत बोनस के लिये राजी हो गये और मैनेजमेन्ट ने 30 नवम्बर की तारीख देने के लिये रख दी लेकिन बोनस दिया नहीं। फिर 10 दिसम्बर को बिना किसी कागज-पत्र के यूनियन प्रधान व महासचिव का गेट रोक दिया गया। श्रम विभाग में शिकायत, असर नहीं। लीडरों द्वारा फैक्ट्री में टूल डाउन का ऐलान। मैनेजमेन्ट ने आरोप-पत्र दे एक-एक कर निलम्बित करने शुरू किये – आज 18 दिसम्बर तक 4 मजदूर निलम्बित किये जा चुके हैं। मजदूरों द्वारा नारे लगाने के खिलाफ कम्पनी अदालत से 18 के खिलाफ सम्मन ले आई है और उन 18 मजदूरों की आज न्यायालय में पेशी है। कम्पनी ने फिर 4 बन्दूकधारी और 40 लठैत फैक्ट्री में बुला लिये हैं। जे.एम.ए. में अब 150 परमानेन्ट मजदूर और 40-45 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर काम करते हैं। मैनेजमेन्ट कई बार 40-50 परमानेन्ट मजदूरों को फालतू बता चुकी है। यह कसरत छँटनी का चक्कर है।"

कमला सिनटैक्स वरकर : "प्लॉट 10-11 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 950 लोग काम करते थे – 700 मजदूर और 250 'स्टाफ'। कम्पनी ने 14.2.1996 को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी और कागजों में इसे मजदूरों की हड़ताल बताया। आठ साल से फैक्ट्री बन्द पड़ी है और किसी वरकर को हिसाब नहीं दिया है – मैनेजमेन्ट कहती रही है कि पैसा नहीं है। इन 8 वर्ष में कम से कम 100 मजदूरों की मृत्यु हो चुकी है। इधर चर्चा है कि फैक्ट्री 3 करोड़ 75 लाख रुपये में नीलाम हुई है। यूनियन नेता दावा डालने के लिये अब फिर 100-100 रुपये हर वरकर से माँग रहे हैं। फैक्ट्री बन्द हुई तब एक लाख रुपये से ऊपर चन्दा यूनियन के पास था।"

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

– खतों से – पत्रों से –

★..... जो घुटन, जो परेशानी, जो शोषण, जो लूट मजदूरों की फरीदाबाद में हैं लगभग वही दशा आज समूचे देश में है। न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका, मीडिया सभी का अपना अलग-अलग रोल है जिसका वे बड़ी तत्परता, ईमानदारी व लगन से पालन कर रहे हैं। वर्ग-विभक्त समाज में यह स्वाभाविक भी है। मजदूरों का शोषण एक सोची-समझी योजना के अन्तर्गत आज समूचे विश्व के पैमाने पर हो रहा है।... आज का कानून, आज के नेता, वकील, थानेदार, बिचौलिये सभी पूँजी के पक्षधर हैं। ऐसी दशा में श्रमिक वर्ग को अपनी मुक्ति के लिये स्वयं को लायक बनाना होगा।

–राजीव, रायपुर

यहाँ कोई भी सच्ची बात अब मानी नहीं जाती
मेरी आवाज़ इस बस्ती में पहचानी नहीं जाती।
बढो आगे करो रौशन दिशाओं को चिताओं से
अकारथ दोस्तो कोई भी कुर्बानी नहीं जाती।
महल हैं, भीड़ है, मन्दिर हैं, मस्जिद हैं, मशीनें हैं
मगर फिर भी शहर से दूर वीरानी नहीं जाती।
कहीं बोतल, कहीं सागर, कहीं मीना, कहीं साकी
यह महफ़िल ऐसी बिखरी है कि पहचानी नहीं जाती।
ये झूठे आश्वासन आप अपने पास ही रखिये
दहकती आग पर चादर कभी तानी नहीं जाती।
ज़बाँ बेची, कला बेची, यहाँ तक कल्पना बेची
नीयत फ़नकार की अब 'क़म्बरी' जानी नहीं जाती।

–अंसार 'क़म्बरी', कानपुर

★आज जितने भी कानून बने हैं वे सब गरीब, मेहनतकश मजदूरों, कर्मचारियों के शोषण के लिये हैं। कानूनों की दुहाई दे कर पूँजीपति व उच्चाधिकारी वर्ग मजदूरों का शोषण करते हैं, वर्तमान में शोषण करने की प्रवृति अधिक हो गई है। कार्यालयों में, फैक्ट्रियों में सब जगह मेहनतकश लोगों का शोषण हो रहा है। हर बात के लिये धन की माँग होती है। मजदूर चूँकि आर्थिक अभावग्रस्त हैं, उन्हें धन की हर समय आवश्यकता रहती है। कम मजदूरी पर अधिक काम करने पर भी समय पर पैसे नहीं दिये जाते ताकि भूखवश कम वेतन पर काम करते रहें। यह सब एक सुनियोजित षडयन्त्र के तहत किया जाता है। मजदूरों को अपनी बात कहने का भी अधिकार नहीं है – झूठे आरोपों में फँसा कर नौकरी से हटा दिया जाना आम बात हो गई है।

–विजय सिंह, बुलन्दशहर

★ मैं जनमानस की अधूरी आशा लिखता हूँ
क्यों घेरे लोगों को निराशा लिखता हूँ
जाबरों के लिये लपटें, शलाखें
मजदूरों के लिये अरदास लिखता हूँ।

–धर्म सिंह, संगरूर

★... मजदूर साथियों के संघर्ष, अनुभव और दुखों.... (से) अपने अनुभव को भी समृद्ध करता हूँ। अपनी कहानियों, कविताओं, नाटकों में इस अनुभव का उपयोग करते हुये मजदूर साथियों के संघर्ष में शामिल होता हूँ।.... –सुरेश, बक्सर

★नई समाज व्यवस्था रचना वास्ते विचार-व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दू सबसे कम मजदूरी पाने वाले (....) समाज के वर्ग को दुर्गत बढाने वाले काल्पनिक सुख की झूठी दिशायें बताने वाले विचारों से मुक्त कराने में मदद देना, समर्थ बनाना वैचारिक धरातल पर... आवश्यक है। ईश्वर व उसके धर्म से अलग दर्शन, सोच का ढँग बनाना तमाम तरह से श्रम को अधीन रखने वाले शोषक विचारों से मुक्ति के लिये जरूरी है।... निर्णायक खुदा, ईश्वर नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य है। अतः सर्वप्रथम काल्पनिक शक्ति "ईश्वर" से छुटकारा दिलाना प्रथम कार्य है।....

– सुमेर सिंह, सीकर

★ मज़दूर को भी जीने का अधिकार मिले
औरों की तरह इसको भी संसार मिले
मज़दूर भी इन्सान हुआ करता है
लाज़िम है ज़माने में इसे प्यार मिले।

– स्वामी श्यामानन्द, दिल्ली

★ हमारे एक परिचित हैं। 1950 में ठेले पर केले बेचते थे। थोड़े दिन बाद क्रिकेट की गेंद बना कर बेचने लगे। कुछ दिन बाद 4 मजदूर रख कर गेंद बना कर बेचने लगे। कुछ वर्ष बाद 50 मजदूरों से गेंद बनवाने लगे और एजेन्टों से गेंद बेचने का काम कराने लगे। सन् 1990 में अपने बेटे के नाम एक और फैक्ट्री लगा ली। बहुत बड़ा महलनुमा मकान बनाया है। परन्तु जिस मजदूर को कारीगर के रूप में गेंद बनाने के लिये रखा था वह आज भी मजदूर है, वह अपना घर नहीं बना पाया है।.... यही है मजदूरी-प्रथा।

– स्वामी मुक्तानन्द, हरिद्वार

★ रोते-बिलखते इन्सान को
हमने धरा पर देखा है।
पीड़ा मन की कैसी होती
जिन्दगी कितनी निष्ठुर है।

–हीरा लाल, बर्दवान

★..... कल-कारखानों में काम कर रहे मेहनतकश मजदूरों का दुःखदर्द.....अपने विचार, अनुभव और कष्ट आपस में बाँट रहे हैं।

हमारे श्रमिक भाई कितनी खराब परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, कदम-कदम पर उनका कैसे शोषण हो रहा है, उनकी आवाज कैसे दबायी जा रही है, वे अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा पाने में क्योंकर असमर्थ हैं – .. .. भुक्तभोगी लोग अपनी अनगढ भाषा में कह रहे हैं। कारखानों के मालिकों, सरकारी नीति-नियामकों और समाज के प्रबुद्ध लोगों की संवेदनशून्यता.....ज्वलंत तथ्यों का अपने लेखन में इस्तेमाल करूँगा।

– कृष्णस्वरूप, इलाहाबाद

★ दर्द की बात कहने से
दर्द बढ जाता है यारो
सदा ही सहते रहने से
कायर चढ जाता है यारो।

–उमेश कुमार, बक्सर

★..... सरकारी नौकरी छोटी हो या बड़ी – बिना बड़ी रिश्वत के नहीं मिल सकती। यही नहीं, न मालूम कितने अभागे तो दलालों को पैसा दे भी देते हैं और न नौकरी पाते हैं, न पैसा वापस पाते हैं।

रेल, डाक, रक्षा, संचार सभी में यह स्थिति है। यदि मंत्रियों, उनके निजी सचिवों, चयन बोर्डो के अध्यक्षों, सदस्यों के सम्पर्क क्षेत्रों की सघन जाँच की जाये तो वस्तुस्थिति उसी तरह सुस्पष्ट होगी जिस तरह पानी के अन्दर टट्टी कर दी जाये तो वह ऊपर आ जाती है।–विद्याधर, इलाहाबाद

★.... अब " न्यूनतम काम और अधिकतम संभव पैसा" की भावना बलवती होती जा रही है।

– प्रबोध कुमार, टोंक

जुगलबन्दी तवे-चूल्हे....

(पेज एक का शेष)

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर : "38 कि.मी. मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में नवम्बर के वेतन में भी अधिक उत्पादन के लिये इनसेन्टिव और कम उत्पादन के नाम पर वेतन कटौती वाला अजूबा जारी रहा। मैनेजमेन्ट और यूनियन जिस ले-ऑफ की बात कर रहे थे उसके भी दर्शन हुये। नवम्बर में 3 दिन और दिसम्बर में 4 दिन की ले-ऑफ लग चुकी है तथा 20 दिसम्बर के बाद फिर ले-ऑफ की चर्चा है। ले-ऑफों के दौरान पूरा स्टाफ ड्युटी पर रहा है, ठेकेदारों के सब वरकर ड्युटी पर रहे हैं और करीब 100 परमानेन्ट मजदूर भी ड्युटी पर रहे हैं। दरअसल 13 नवम्बर को आरम्भ की नई वी आर एस फुस्स रही है। कम्पनी के सब हथकण्डों के बावजूद मजदूरों ने बहुत ही कम इस्तीफे दिये। छँटनी के लिये दबाव बढाने और माहौल बनाये रखने के लिये ले-ऑफ का नाटक चल रहा है।"

कानून हैं शोषण के लिये..**(पेज तीन का शेष)**

जरिये रखे वरकर काम करते हैं। परमानेन्टों को नवम्बर की तनखा 14 दिसम्बर को दी और ठेकेदारों के जरिये रखों को आज 20 दिसम्बर तक नहीं दी है। ठेकेदारों के जरिये रखों को 1400 रुपये महीना वेतन है – ई.एस.आई. नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

नैपको गियर वरकर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में नवम्बर का वेतन आज 20 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

सी.एम.आई. मजदूर : "प्लॉट 71 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें आज 20 दिसम्बर तक नहीं दी हैं।"

महिला मजदूर

" हम आटो से फैक्ट्री आती-जाती हैं। लड़कियों ने मिल कर महीने के हिसाब से आटो किया है। आटो में मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। हर एक को बहुत तकलीफ होती है। इतनी जगह नहीं होती आटो में पर इस समय एक आटो में हम 12 लड़कियाँ ठूँसी रहती हैं। ड्राइवर के अगल-बगल और डण्डे पर बैठने में ज्यादा खतरे तो हैं ही, सर्दियों में तो नरक के दर्शन हो रहे हैं। अन्दर की तरफ आमने-सामने चार-चार को बैठना पड़ता है और डण्डे पर बैठियों के पैर होते हैं। ऐसे में अक्सर किसी को गोद में बैठाना पड़ता है और उतरने के समय तक पैर सो जाते हैं। कई आटो में लड़कियाँ फैक्ट्री पहुँचती हैं। इधर कम्पनी द्वारा बस का प्रबन्ध करने की चर्चा हमें कोई राहत देती नहीं लगती। दो पैसे के लिये ही हम इतनी परेशानियाँ उठाती हैं और कट-पिट कर हमें महीने के 1800 रुपये मिलते हैं। कम्पनी इन 1800 में से 400 रुपये बस के लिये लेने की बात कह रही है! और, हम पर एहसान जताने के लिये कम्पनी यह भी कह रही है कि कई हजार रुपये हर महीने कम्पनी अपनी तरफ से बस के लिये देगी।"

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

मनीष विनाइल मजदूर : "प्लॉट 67 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। फैक्ट्री में 280 मजदूर काम करते हैं और बरसों से काम कर रहों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। हैल्परों को 1650 और ऑपरेटरों को 2200 रुपये तनखा दी जाती है।"

आर.आर. आटोमोटिव वरकर : " 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें आज 12 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। परेशान हो कर कई मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी है परन्तु उनमें से किसी को भी कम्पनी ने हिसाब नहीं दिया है।"

के. के. टेक्सटाइल्स मजदूर : " 141 डी एल एफ एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। महीने के तीसों दिन 12 घण्टे रोज काम के 2200 रुपये देते हैं – रविवार को छुट्टी करने पर पैसे काट लेते हैं। फैक्ट्री में चोट लगने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते – ज्यादा चोट लगने पर प्रायवेट में कुछ इलाज करवा कर फिर ठेकेदार के वरकर के नाते ई.एस.आई.का कच्चा कार्ड पकड़ा देते हैं।"

इन्जेक्टो लिमिटेड वरकर : "20/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अभी जून की आधी तनखा दी है और जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर तथा नवम्बर की तनखायें आज 20 दिसम्बर तक नहीं दी हैं।"

नौनिहाल इलेक्ट्रोप्लेटिंग मजदूर : " फैक्ट्री अभी सैक्टर-58 स्थानान्तरित नहीं की है। अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें हमें आज 12 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। श्रम विभाग में शिकायतों पर मजदूरों की कोई सुनवाई नहीं होती।" **(बाकी पेज दो पर)**

क्लच आटो वरकर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर का वेतन 21 नवम्बर को जा कर दिया था और नवम्बर की तनखा आज 13 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

बाकमैन इन्डस्ट्रीज मजदूर : " प्लॉट 10 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 25-30 परमानेन्ट और 60-70 ठेकेदारों के

हिन्दुस्तान सिरिंज

हिन्दुस्तान सिरिंज मजदूर : " प्लॉट 178-179 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों पर काम का बहुत-ही ज्यादा बोझ है। बैठने के लिये कम्पनी स्टूल नहीं देती और लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। काम बहुत जल्दी-जल्दी करना पड़ता है, मशीन के हिसाब से वरकर को मशीन बनना पड़ता है – कम्पनी एक वरकर से एक मशीन पर एक शिफ्ट में 48 हजार सिरिंज निकलवाती है। दस्ताने नाममात्र के होते हैं, सूइयाँ चुभती रहती हैं। रक्त निकलता रहता है और ज्यादा खून निकलने पर ही हाथ धोने भेजते हैं। फैक्ट्री में डिस्पोजेबल सिरिंज, ऑपरेशन ब्लेड, ऑपरेशन धागे और ग्लुकोज-दवा चढाने वाले कैन्युला बनते हैं। ब्लेडों को धार लगानी पड़ती है और तेज रफ्तार के कारण हाथ कटते हैं, ज्यादा ही रक्त निकलता है। फैक्ट्री में नाममात्र के कपड़े के जूते पहनने पड़ते हैं और फर्श पर गिरी सिरिंज की सूइयाँ पैरों में घुस जाती हैं।

"मशीनें बन्द नहीं होनी चाहियें, उत्पादन रुकना नहीं चाहिये के चक्कर में कम्पनी टट्टी-पेशाब जाने तक पर रोक लगाती है। एक वरकर ने एक दिन सुपरवाइजर से टट्टी जाने की अनुमति माँगी लेकिन उसे इजाजत नहीं दी गई। दो-तीन बार माँग ठुकराये जाने के बाद लड़के ने विभाग में ही टट्टी कर दी – इस से डेढ लाख सिरिंज रिजेक्ट हो गये।

" उत्पादन के दबाव में सुपरवाइजर तनाव में रहते हैं। मशीनें बन्द नहीं हों इसलिये सुपरवाइजर किसी मजदूर को रात 1 बजे, किसी को 2 बजे, किसी को रात 3 बजे आधा घण्टा का भोजन अवकाश करने को कहते हैं। फैक्ट्री में सुपरवाइजर गालियाँ देते हैं, वरकर का गिरेबान तक पकड़ लेते हैं और बाहर सुपरवाइजर पिटते हैं।

" कम्पनी की वर्दी पहनना झँझट है, शरीर बन्ध जाता है। भूतहा वर्दी में सिर्फ आँखें दीखती हैं। फैक्ट्री में पूरा माहौल ही मनहूस है। और, किसी लड़के–लड़की को आपस में बात करते साहब लोग देख लेते हैं तो नौकरी से निकाल देते हैं।

" हिन्दुस्तान सिरिंज में ताजा-ताजा दसवीं-बारहवीं किये लड़के-लड़कियों को ही भर्ती करते हैं। छह महीने ही रखते हैं। दूसरी बार रखते ही नहीं – कम्प्युटर में फोटो व रिकार्ड रखते हैं। बहुत से लड़कों को आमतौर पर रात को ही काम करना पड़ता है – 6 महीने में मात्र 14 दिन ही सुबह की शिफ्ट रही। कई लड़के जल्दी ही बीमार पड़ जाते हैं।

" बेरोजगारी के इस आलम में भी वरकर टिकते ही नहीं। मजदूरों को बाँधने के लिये हिन्दुस्तान सिरिंज मैनेजमेन्ट ने नया कानून बनाया है कि फैक्ट्री में तीन महीने पूरे करने से पहले किसी वरकर द्वारा नौकरी छोड़ देने पर नौकरी छोड़ने के तीन महीने बाद जा कर ही उसे हिसाब दिया जायेगा।"

मत्यु-हत्या के मुहाने

★ खटीमा (उधमसिंह नगर) स्थित **खटीमा फाइबर्स लिमिटेड** फैक्ट्री में 25 नवम्बर को रात 11 बजे पल्प डाइजेस्टर में कच्चा माल पहुँचाते 20 वर्षीय मजदूर राकेश का पैर फिसला और वह डाइजेस्टर में गिर गया। राकेश के गम्भीर चोटें आई। खटीमा अस्पताल से बरेली अस्पताल ले जाये गये राकेश की वहाँ मृत्यु हो गई।

इसी खटीमा फाइबर्स लिमिटेड फैक्ट्री में डेढ वर्ष पूर्व डाइजेस्टर में भाप भरते वक्त ढक्कन फटने से चार मजदूर भाप से झुलस कर मर गये थे।

रस्सियों व बाँस की खपच्चियों की सहायता से बनी कामचलाऊ युक्तियों द्वारा मजदूर खटीमा फाइबर्स फैक्ट्री में टैंकों, बॉयलरों व डाइजेस्टरों पर चढते हैं – हमेशा जान जाने का खतरा रहता है।

(जानकारी "नागरिक" पाक्षिक के 16-31 दिसम्बर अंक से ली है।)

★ **रेबेस्टोस मजदूर** : "प्लॉट 111 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में प्रदूषण बहुत ज्यादा है – जानलेवा है। कैन्सर और टी.बी. (एस्बेसटोसिस) फैक्ट्री की हवा में हैं। इस 14 दिसम्बर को एक और मजदूर की फैक्ट्री-जनित बीमारी से मृत्यु हो गई। कैन्सर-टी.बी. (एस्बेसटोसिस) से चार मजदूरों की मृत्यु हो चुकी है और इन बीमारियों से पीड़ित 15-20 वरकर ड्युटी कर रहे हैं। रेबेस्टोस फैक्ट्री में भी **नोर्थ वैस्ट** और **हैदराबाद इन्डस्ट्रीज** फैक्ट्रियों की ही तरह उत्पादन में घातक एस्बेसटोस इस्तेमाल होता है जिससे कैन्सर-टी.बी. (एस्बेसटोसिस) आदि जानलेवा बीमारियाँ होती हैं। कम्पनी खानापूर्ति के लिये डॉक्टर बुलाती है परन्तु रिपोर्ट दबा देती है। फैक्ट्री में मात्र 45-46 परमानेन्ट मजदूर हैं जबकि 200 से ज्यादा कैजुअल वरकर हैं। रेबेस्टोस फैक्ट्री में 4-5 साल से लगातार काम कर रहे मजदूर भी कैजुअल वरकर हैं। कम्पनी ने कुछ मजदूर ठेकेदार के जरिये भी रखे हैं। रोटी के लिये काम और मौत संग-संग हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.फरीदाबाद–121001

भविष्य निधि-पी.एफ.

★ " श्रीमान श्रम मन्त्री, भारत सरकार

विषय : रिटायर होने के डेढ वर्ष बाद भी पेन्शन नहीं। क्षेत्रीय भविष्य निधि कार्यालय, फरीदाबाद द्वारा मजदूर का पत्र लेने से इनकार – उक्त पत्र की प्रति संलग्न है। रिश्वतखोरी का जाल।

महोदय,

मैं, रमेश चन्द (पी.एफ. नम्बर एच.आर./286/3671), तीस वर्ष नौकरी करने के पश्चात 30.6.2002 को रिटायर हुआ लेकिन आज तक मुझे पेन्शन नहीं मिली है – पेन्शन के लिये मेरा फार्म कम्पनी ने नहीं भरा है। इस बारे में 17.12.2003 को क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, फरीदाबाद को मैं पत्र देने गया तो उनके कार्यालय ने मेरा पत्र लेने से इनकार कर दिया, मिलने भी नहीं दिया।

श्रीमान, 1994 से झालानी टूल्स कम्पनी ने क्षेत्रीय भविष्य निधि कार्यालयों से साँठगाँठ कर भविष्य निधि जमा नहीं करवाई है – यह राशि 18 करोड़ रुपये से अधिक है। झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने वेतन से काटी भविष्य निधि राशि का गबन तक किया है। और, इधर क्षेत्रीय भविष्य निधि कार्यालय, फरीदाबाद तथा झालानी टूल्स के कुछ कर्मचारियों ने पेन्शन व भविष्य निधि फार्म भरने के लिये रिश्वत का धन्धा जोरों से चला रखा है। कृपया जाँच कर कार्रवाई करें।..."

★ **इण्डिया फोर्ज मजदूर :** " प्लॉट 28 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10-20 मजदूर ही परमानेन्ट हैं और बाकी 5-600 को कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये रखा है। प्रोविडेन्ट फण्ड निकालने के लिये फार्म भरने की एक ठेकेदार 500 रुपये रिश्वत लेता है। और... और मजदूर की जो भविष्य निधि की राशि होती है उसमें से भी आधी को अपनी बता कर ठेकेदार खाते में एडवान्स दिया दर्शा कर ले लेता है! मजदूर की अगर पाँच हजार रुपये भविष्य निधि राशि है तो मजदूर के हाथ दो हजार रुपये ही आते हैं।"

★ **किन्सले रबड़ वरकर :** " प्लॉट 56 डी, इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मैं, बूचा सिंह, 4.1.1975 को लगा था। जून 03 में मैं बीमार पड़ा और ई.एस.आई. में इलाज करवाया – सन् 1975 से मेरे पास ई.एस.आई. कार्ड है। तीन महीने तक मेडिकल छुट्टी के पैसे ई.एस.आई. से मुझे मिले परन्तु फिर ई.एस.आई. लोकल आफिस ने पैसे देने से इनकार कर दिया और 12 हफ्तों के मेडिकल छुट्टी के मेरे पैसे बकाया हो गये। मैंने ई.एस.आई. क्षेत्रीय निदेशक से शिकायत की है और उन्होंने आश्वासन दिया है। पैसे की दिक्कत से पार पाने के लिये मैंने अपने प्रोविडेण्ट फण्ड से पैसे निकालने का तय किया। और, तब यह जान कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि **मेरी 28 वर्ष की भविष्य निधि राशि कम्पनी ने जमा ही नहीं की है।** मैंने प्रोविडेण्ट फण्ड दफ्तर में शिकायत की। नवम्बर 03 में अधिकारियों ने किन्सले रबड़ फैक्ट्री पर छापा मारा।"

बन्दी वाणी (6)

[अमरीका सरकार ने "अपने" बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अनुवाद की और सन्दर्भों की दिक्कतों के कारण यहाँ हम अपने शब्दों में अमरीका सरकार के कैदखानों में बन्द लोगों की वाणी को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।]

कुरती पागलपन से

मैं : बहुत शोर कर रहे हो तुम!
जानबूझ कर है यह क्या?
शैतान मस्तिष्क
खिलौनों- सा खेलते मुझसे।

पागलपन : *मात्र एक बच्चे थे तुम जब*
पला मैं डरावने सपनों पर
मृत माँ को देखा जिस रात
थे आठ वर्ष के, छूआ मैंने तुम्हें।

मैं : गलती थी वह दाई की....
छह वर्ष का ही था मैं
बना शिकार व्यभिचार का
उपजी उससे हवस, बना मैं गुलाम।
पीटते थे पिता स्त्रियों को....
चाकू घोंपते देखता हूँ उन्हें।
पीटते थे मुझे भी गुस्से में।
घृणा करता मैं उनकी दारू से।

पागलपन : *बस पीछे देखते रहो....*
झटक चाबुक देखता टूटते तुम्हें
देखोगे मेरी आँखों से हकीकत
डूबोगे दर्द में इशारे पर मेरे।

मैं : और प्रश्न मत पूछो!
देखूँगा नहीं मैं सपना तुम्हारा....
झूठी हैं भविष्यवाणियाँ, ध्यान नहीं दूँगा!
जान नहीं सकते तुम क्या है मन में मेरे!
विद्यालय में बच्चे एक समान....
मुझे चिढाते, झगड़ते मुझ से।
दोषी सदा मैं ही
लड़ता अपने होने के लिये।
पैसा नहीं, दया- भोजन टिकटें खत्म....
तीन वर्ष पहने कपड़े वही स्कूली...
बर्फ में बर्फ- सा ठण्डा घर।

पागलपन : *विद्रोही योद्धा, पगले बेफिक्र...*
पाप ही पाप तुम्हारे राज की गलियों में
सदा ही चालाक, चतुर हमेशा
मूर्खों के तुम राजा सचमुच।
मैं पीछे, तुम भागे
तेरह से उन्नीस खोये मजे में
चाहत जगा जला डाला तुमने
पत्थर हृदय माना नहीं बेटे को अपना।
था आसान तुम्हें ढूँढना सदा ही
लेता खोज तुम्हें अन्धा जो होता।
हिंसा, चोरी, झूठ, मृत्यु
छोड़ जाते ये बू तुम।

मैं : छोड़ दो अकेला! याद नहीं मुझे...!
बहुत दर्द है यादों में।
गोलियाँ मारी कायरों के मैंने
उन्नीस सौ सत...? आह! दारू!!
हिम्मत करते हो क्रूर कहने की मुझे....
पापी, पत्थर हृदय, असभ्य मैं?
पाप पहाड़ अमरीका से करो तुलना
औसत हैं अपराध मेरे।
लूट- हत्या को उकसाते
हालात रचे हैं मैंने क्या?
दे सकूँ भूखों को भोजन
हूँ क्या ऊँचे पदों पर मैं?

पागलपन : *हत्यारे काँपते हैं मुझ से*
टूटे हैं सौ करोड़ मन
फुसफुसाऊँगा दर्द जब तक चीख न पड़ो
डूब जाओ समुद्र में जहाज की तरह।
गर्व के शिकार हुये तुम
कैद किया भावनाओं को गहरे अन्दर
पुकारता हृदय तुम्हारा प्यार
छिपाते तुम जीवन व्यापी अकेलेपन को।
निभा ना सके, खोया विश्वास
जीते थे जिसके लिये, उस लड़की का प्यार।
हृदय बना छुट्टा घायल पशु
डर ने बनाया तुम्हें आक्रमणकारी।

मैं : क्या चाहते हो मुझ से!
जो किया उसे बदल नहीं मैं सकता।
बचपन से ही दुभान्त का, गरीबी का शिकार
गलती हुई कहा था उससे मैंने...
जानती वह तो माफ कर देती।
कमजोर था मैं, प्यार मेरा मजबूत
सत्य अंश है सब झूठों में यह।
करूँ जो है सही, कोशिशें बदलने की
बीस वर्ष से ऊपर।
संघर्षरत हूँ क्योंकि गोरा नहीं हूँ मैं
काला और मुक्त यानि युद्ध।

पागलपन : *बुलाया तुमने दुर्गत में मुझे।*
देखो आया हूँ इसीलिये मैं
अनुरोध तेरे पर बेहतरीन करूँगा मैं।
सच ही संकल्प सशक्त तुम्हारा
नरक जीवन में भी डटे हो तुम।
वर्षों जेल में प्रयास किये हैं असफल।
होगे तुम मेरे, अब कम ही लगेगा वक्त।

मैं : निकट पहुँचे तुम, नहीं जीतोगे कभी
पा ली है मुक्ति की नई राह मैंने
प्रकट- सी हुई है
शुरुआत नई दिशा की।
मन- मस्तिष्क- स्वाभिमान बचाने
समाधान है एक
समाज बदलने और सत्य को
अर्पित अपना जीवन मैं करता।

– पॉल, अमरीका सरकार के कारागार में बन्दी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।